Vol. 15, Issue: 07, July: 2026

ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन : दुर्ग विकासखण्ड के परिप्रेक्ष्य में

DOI: https://doi.org/10.63345/ijre.v15.i7.6

डॉ. पूजा दुबे

सहायक प्राध्यापक

संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय,

अम्बिकापुर, सरगुजा, (छ.ग.)

सारांश :- डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार - शिक्षा को मनुष्य और समाज निर्माण करना चाहिए। इस कार्य के बिना अनुभव और अपूर्ण है। शिक्षा सर्वांगीण विकास से संबंधित है। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपने वातावरण से समायोजन करने का प्रयास करता है। शिक्षा को तभी सफल माना जाता है, जब वह व्यक्ति के व्यवहारों को परिभाषित करने में सफल हो सके। मानव जीवन में उत्तेजना ही संवेग है। यदि संवेगों का विकास संतुलित रूप में नहीं हो पाता है तो व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है। बालक के संवेगात्मक विकास और व्यवहार का आधार है, उसके प्रेम, हर्ष और उत्सुकता आदि भाव जो बालक के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में योग देते हैं। जबकि भय, क्रोध और ईर्ष्या आदि निन्दनीय संवेग उसके विकास को विकृत एवं कुण्ठित कर देती है। विद्यालय की शैक्षिक प्रक्रियाओं में संवेगात्मक अस्थिरता के कारण उत्पन्न विद्यार्थी के आचरण की समस्या को प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है। मानो यह कोई बाह्य तत्व है, जो शिक्षण के उत्तरदायित्व के क्षेत्र का विषय नहीं है। उत्तरदायित्व को यह अवबोध संवेगात्मक रूप से अस्थिर बालक को एक प्रभावशाली विद्यार्थी बनने से वंचित कर सकता है।

शब्द कुंजी :- संवेग, उत्तेजना, संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक परिपक्वता, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया।

प्रस्तावना :-

शिक्षा एक ऐसा प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में सहयोग प्रदान करती है। मनुष्य के व्यक्तित्व गुणों का पूर्ण विकास करती है, तथा उसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती है। व्यक्ति अपने वातावरण से तभी समायोजित होता है, जब उसमें सांवेगिक बुद्धि हो, क्योंकि संवेग का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति के जीवन की दिशा का निर्धारण करती है, अतः विद्यार्थियों का सांवेगिक रूप से परिपक्व होना अति आवश्यक है।

Vol. 15, Issue: 07, July: 2026

ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

शोध का विषय :-

शोधकर्ता के द्वारा संवेगात्मक परिपक्वता के महत्व को समझते हुए कक्षा नवमी में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के अध्ययन जैसी समस्या का चयन अपने शोध कार्य के लिए किया गया है।

अध्ययन की परिसीमा :-

अध्ययन की परिसीमन का तात्पर्य है, समस्या तथा उसके अध्ययन के व्यापक क्षेत्र को सीमित करना। समस्या का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है। समस्या के अध्ययन को सीमित करके उसे सीमाबद्ध करना ही अध्ययन का परिसीमन है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हाई स्कूल में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करने तक सीमित है।

अध्ययन के उद्देश्य :-

1. हाई स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता को ज्ञात करना।
2. हाई स्कूल में अध्ययनरत सामान्य जाति, पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :-

1. हाई स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. हाई स्कूल में अध्ययनरत सामान्य जाति, पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के आधार पर किया गया है। यह विधि पूर्णतः उद्देश्य पर आधारित होती है। इस न्यादर्श विधि में शोधकर्ता जनसंख्या के उस समूह की इकाइयों का अध्ययन करता है जो अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं।

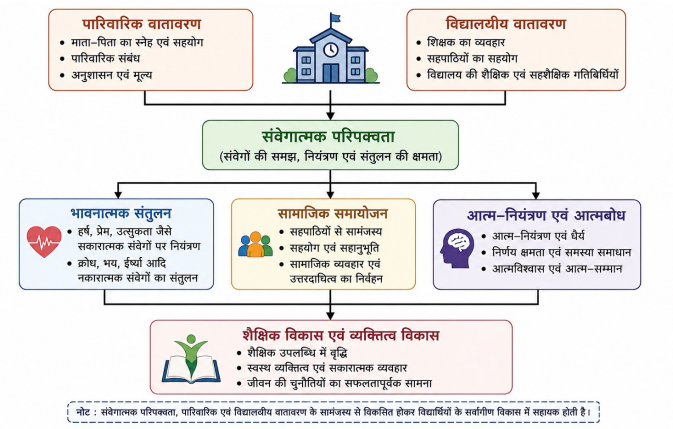

उपकरण :-

प्रस्तुत अध्ययन में संवेगात्मक परिपक्वता के अध्ययन हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन विधि :- सर्वेक्षण विधि

प्रयुक्त सांख्यिकी :- मध्यमान एवं मानक विचलन।

परिणाम :-

1. हाई स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

Vol. 15, Issue: 07, July: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

2. हाई स्कूल में अध्ययनरत सामान्य जाति, पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

उपसंहार :-

हाई स्कूल में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जो विद्यार्थी अध्ययन में कमजोर थे, उनमें से एक महत्वपूर्ण भाग ऐसे विद्यार्थियों का था जिन्हें किसी न किसी प्रकार की संवेगात्मक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे किशोर अपने व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक समायोजन में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इनमें से अधिकांश विद्यार्थियों के अपने माता-पिता के साथ संतोषजनक संबंध नहीं पाए गए।

बालक की संवेगात्मक स्थिति उसके वातावरण के साथ स्वस्थ समायोजन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न समस्याएँ, उनसे उत्पन्न अभिवृत्तियाँ तथा भावनाएँ बालक के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। माता-पिता से पर्याप्त स्नेह एवं सहयोग प्राप्त न होने पर बालकों में असामान्य अथवा अवांछित व्यवहार विकसित हो सकता है। बालकों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक उपादेयता :-

वर्तमान समाज में यह धारणा है कि हाई स्कूल स्तर पर उचित शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि हाई स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर अपेक्षाकृत संतोषजनक है। संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है तथा उसे जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने योग्य बनाती है।

इस शोध की उपादेयता तभी सार्थक सिद्ध होगी जब अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा एवं संवेगात्मक आवश्यकताओं को समान महत्व देंगे। इससे विद्यार्थियों के साथ-साथ विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं का मनोबल भी बढ़ेगा। शोधकर्ता के मतानुसार यह अध्ययन समाज एवं शिक्षा व्यवस्था दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भविष्य हेतु सुझाव :-

1. सामान्य जाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. सामान्य विद्यार्थियों एवं अनाथ विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
5. संवेगात्मक परिपक्वता का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

Vol. 15, Issue: 07, July: 2026

ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

संदर्भित ग्रंथ :-

1. हमीद, ए., एवं पाहिजा, के. के. (2010). **शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन**। *एडुट्रैक*, खंड-10, अंक-03, पृ. सं. 43-55।
2. आदित्य, एस., एवं जैन, पी. (2009). **संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन : एकल एवं संयुक्त परिवार के छात्रों पर**। *एडुट्रैक*, खंड-72, अंक-01, पृ. सं. 50-51।
3. जोशी, आर., गुप्ता, एवं जैन तोमर, एस. (2009). **किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अध्ययन**। *एडुट्रैक*, खंड-72, अंक-01, पृ. सं. 69-89।